

CHOICE OF MILLIONS SINCE 1970
CHARMINAR
PAINT BRUSH
www.charminarbrush.com
9440297101

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता



वर्ष-28 अंक : 325 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टनम, तिरुपति से प्रकाशित) माघ शु.3 2080 सोमवार, 12 फरवरी-2024

प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये

दिल्ली कूच पर अडे किसान, पंजाब-हरियाणा बॉर्डर सील

सिंघु-टिकी पर बैरिंकिंग, कीले ठोकी, चंडीगढ़ में धारा 144 लागू, फ्रैक्टर को 10 लीटर डीजल मिलाया अबाला, 11 फरवरी (एजेंसियां)। संयुक्त किसान मोर्चा (एसकेएस) के 13 फरवरी को दिल्ली कूच से पहले हरियाणा और पंजाब के शंभू, खनीरी समेत सभी बॉर्डर सील कर दिए गए हैं। बहीं सिंघु और टिकी बॉर्डर पर भी सील के बैरिंक लगा दिए गए हैं। पंजाब से आने वाले किसानों को रोकने के लिए अंबाला के शंभू बॉर्डर और फाहराबाद में बैरिंक्स और लोहे की कीलों लगा दी गई है।

हरियाणा में जिलों में रविवार सबह 6 बजे से मोबाइल इंटर्नेट, डॉगल और बल्क एसएमएस बंद कर दिए गए हैं। यह रोक अंबाला, हिसार, कुक्कोट, कैथेल, जीद, फतेहाबाद और पुलिस जिला डबवानी समेत सिरसा जिले रहेंगी। यह आदेश 13 फरवरी की रात 12 बजे तक लागू रहेंगे।

हारियाणा के सोनीपत, झजर, पंचकुला, अंबाला, कैथेल, हिसार, रसिसा, फतेहाबाद और जीद समेत 12 जिलों में धारा 144 लागू की गई है। इसके साथ पंजाब और दिल्ली के रूट भी डायरेक्ट कर दिए गए हैं। केंद्र सरकार ने वैरोमालिट्री के 64 कंपनियों को हरियाणा भेज दिया है। जिनमें 7 वीएसएफ और सीआरपीएफ के जवान भी शामिल हैं। किसान-मजदूर मोर्चा के कोआडिनर सरकार से विरोध के लिए अमृतसर में धारा 144 कूच की गई है। इसके साथ पंजाब के जवानों को हरियाणा भेज दिया गया है। जिसमें कहा गया कि 12 फरवरी को चंडीगढ़ में केंद्र के 3 मंत्रियों के साथ मीटिंग होगी।



परियोजनाओं की आधारशिला रखी। कुछ प्रोजेक्ट्स का लोकार्पण किया। पीएम ने झाबुआ से ही खगोन में 170 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले टंट्या मामा भील शिवविद्यालय की आधारशिला रखी।

मोदी के भाषण की खास बातें...

प्रचार के लिए सभापंडित नहीं आया : मोदी लोकसभा प्रचार के लिए नहीं आया : मोदी तो सेवक के तौर पर ईश्वर, रुपी एमपी की छुट्टी हुई थी, 2024 में सफाया तथा है। प्रधानमंत्री ने कहा, मध्यप्रदेश में विधानसभा चुनाव के तौर पर नियमों से आप पहले ही बता दिया है कि 2024 में 400 पारा, वोट झाजदा लाने की जड़ी-बूटी है, इसलिए इस बार विषय के बड़-बड़ नेता पहले से ही कहने लगे हैं - 2024 के 400 पारा, फिर एक बार मोदी सकारा।

इससे पहले प्रधानमंत्री ने सभापाल्य पर रथ पर सवार होकर लोगों का संवादित किया। लोगों के रोड शो के लिए मध्यप्रदेश के जारी हो गई है। अपनी गैली बर्ही गई। उन्होंने 7550 करोड़ रुपये की विकास

झाबुआ में मोदी बोले- लूट और फूट कांग्रेस की आँखीजन, 2023 में छुट्टी हुई थी, 2024 में सफाया तय

पेंगिंग बूथ पर सबसे ज्यादा वोट मिले थे। फिर आप तय करना कि अब जो ज्यादा से ज्यादा वोट बूथ में मिले थे, उसमें इस बार 370 नए बोले जाने चाहिए। यानी पिछले से 370 वोट ज्यादा लाना है।

2024 में कांग्रेस का सफाया तय : पीएम ने कहा, 2023 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की छुट्टी हुई 2024 में सफाया तय है। कांग्रेस का एक ही काम है - नफरत, नफरत और नफरत।

जनजातीय समाज के सम्मान की गारंटी : हमारे लिए ज्यादा लोगों का हावा बोट नहीं, देश का गोरख है। आपका समाज और विकास मोदी के सफाये मोदी का सकल है।

बैटियों का पढ़ाने का बचन : हमारे लिए ज्यादा लोगों का सुखमंडी था, तब गुंबां-गुंबां घर-घर जाकर कहता था कि मुझे भिक्षा में बचने दो कि आप अपनी बेटी को पढ़ाओगे। 40-45 तापमान, गर्म हवाओं में मैं दाङुआ के बगल में दाहोद के जंगल में छोटे गांवों में जाकर बैटियों की अंगूषी पकड़कर स्कूल ले जाने का काम करता था।

बैटियों की विकिसित बनाया : हमारे लिए आपके यहां पर कितने बोट पड़े, वो निकाला। यह लिख लो कि पिछले तीन चुनाव में आपके यहां परिलिंग बूथ में काला पर कितने बोट पड़े, वो निकाला। यह लिख लो कि आदिवासियों के जीवन के

स्वामी दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती

मोदी : अपने दोर में उन्होंने महिला अधिकारी की बात की, हमें महिलाओं को आशान दिया नहीं दिल्ली, 11 फरवरी (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नेंद्र मोदी रविवार को आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती विवरण के मार्गी में आयोजित कार्यक्रम में वर्चुअली शामिल हुए। पीएम ने 10 मिनट की स्पीच में स्वामी दयानंद सरस्वती के जीवन, देश और समाज में उनकी भूमिका पर बात की।

प्रधानमंत्री : प्रधानमंत्री ने कहा, 2023 के लिए सिक्तसेल अभियान शुरू किया। यह नीयत का ही फल है कि हमने मप्र को बीमार राज्य से विकसित राज्य बना दिया है।

वंचित-पिछड़े सरकार की प्राथमिकता :

देश में जो सबसे वंचित, सबसे पिछड़े हैं, हमारी सरकार में वे प्राथमिकता पर हैं। जो सबसे गरीब, थे, आज सबसे पहले सरकार उनके लिए योजनाएं बनानी हैं।

मोदी के खिलाफ बोट के साथ मोदी :

कांग्रेस के लोकल नेता भी पार्टी अलालम संसद के कहने लगे हैं कि हम मोदी के खिलाफ बोट मार्ग में जाएं तो कैसे मोदी बोट जाएं? वोंगा और बेंगा की मुनीबत तो है।

कांग्रेस की आँखीजन-लूट और फूट :

कांग्रेस अपने पापों के दलदल में फंस रही है। जितना किनकरने की कोशिश करे तो हुए है, कहा, देश स्वामी दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती में नहीं रहा।

मेरी इच्छा थी कि मैं खुद स्वामी दयानंद ने अपने दोर में महिलाओं के अधिकारों और उनकी बात की थी। नारी भागीदारी का बात की थी। उन्होंने अब 5वीं गोरखा राइफल्स की पहली बटालियन को आयोगी भागीदारी की थी। इसके साथ स्वामी दयानंद के लिए योजना की थी।

प्रधानमंत्री : प्रधानमंत्री ने कहा, देश स्वामी दयानंद के लोकल नेता भी पार्टी के खिलाफ बोट कर लिए हैं।

एमपी में आमुनिक :

झाबुआ सरकार एमपी में आधिकारिक इंप्रास्ट्रक्चर पर खास ध्यान :

हमारी सरकार एमपी को आपका जीवन के लिए जितना चाहिए।

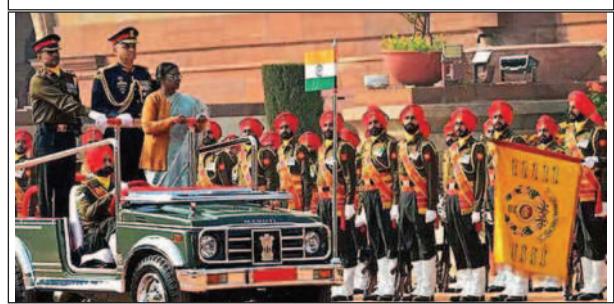
मोदी के लिए जितना चाहिए :

कांग्रेस के लोकल नेता भी पार्टी के खिलाफ बोट कर रहे हैं। जितना चाहिए जितना चाहिए।

अमित शाह के साथ मीटिंग की, लोकसभा चुनाव और जेडीएस से सीट शेयरिंग पर चर्चा

आर्मी गार्ड बटालियन के बदलाव समायेह में शामिल हुई शाष्ट्रपति मुर्मू

सैनिकों की सराहना की



नई दिल्ली, 11 फरवरी (एजेंसियां)। भारतीय राष्ट्रपति गार्ड बटालियन के गार्ड रेजिमेंट की 6वीं बटालियन के दो दिन बाद से बदलाव के लिए योजनाएं तैयार की गयी हैं।

बटालियन ने अपने दोर में महिलाओं के अधिकारों और उनकी बात की थी। नारी भागीदारी का बात की थी। उन्होंने अब 5वीं गोरखा राइफल्स की पहली बटालियन को स्वामी दयानंद के लिए योजना की थी। इसके साथ स्वामी दयानंद के लिए योजना की थी।

समायेह के दौरान राष्ट्रपति मुर्मू ने सिख रेजिमेंट की 6वीं बटालियन के दो दिन बाद से बदलाव के लिए योजनाएं तैयार की गयी हैं।

गणतंत्र दिवस और स्वतंत्र दिवस परेड में शामिल होती है।

आर्मी गार्ड बटालियन की 200वीं जयंती के लिए योजनाएं तैयार की गयी हैं।

सेना की इस ईकाई ने दोनों विश्व युद्धों में हिस्सा लिया था और बहाली के विभिन्न कार्यों के लिए उन्होंने एक बड़ी बदलाव के लिए योजना की थी। इसके साथ स्वामी दयानंद के लिए योजना की थी।

पंजाब में इंडो-पाक बॉर्डर के पास बीएसएफ को मिला चीन में बना द्वारा

अलग अप्राप्तवार के लिए जितना चाहिए :

पीएम ने कहा, मोदी से भीषण रुप से बदलाव के लिए जितना चाहिए। यह जितना चाहिए। उन्होंने अब 5वीं गोरखा राइफल्स की आयोगी भागीदारी की जीवन की शुरूआत की थी।

किसी भाजपा नेता के खिलाफ बोट कर रहे हैं। जितना चाहिए जितना चाहिए। उन्होंने अब 5वीं गोरखा राइफल्स की आयोगी भागीदारी की जीवन की शुरूआत की थी।

किसी भाजपा नेता के खिलाफ बोट कर रहे हैं। जितना चाहिए जितना चाहिए। उन्होंने अब 5वीं गोरखा राइफल्स की आयोगी भागीदारी की जीवन की शुरूआत की थी।

मुंबई, 11 फरवरी (एजेंसियां)। ज्यादा लोगों का न

दिग्भ्रमित होते युवा



ਰਾਮਦਾਨ

एक अरब 41 करोड़ की आबादी के बोझ तले दबे भारत के लगभग साठ फीसद युवा अपने मंजिल की तलाश में हैं। लेकिन जहां कुछ युवा सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थानों में प्रवेश पाकर जीवन का मकसद पाने के लिए अच्छी पढाई कर रहा है तो वहां एक वर्ग ऐसा भी है जो वॉट्सएप पर मिलने वाली हर सूचना की फैक्ट-चेक किए बिना उस पर विश्वास कर अपना भविष्य अंधेरे में धकेल रखा है। अच्छी शिक्षा के अभाव में ऐसे युवाओं की संख्या घटती जा रही है, जो ठहरकर सोचते हैं और तर्क करते हैं। यह स्थिति तब है, जब संसार भर की बुद्धिमत्ता, तार्किकता, टेक्नोलॉजी को अपनाने की क्षमता आज युवाओं में है। जब दूर-दराज के इलाकों में भी ई-कॉमर्स की पहुंच हो चुकी है और मोबाइल से यूपीआई आधारित भुगतान-प्रणाली का व्यापक तौर पर अपना लिया गया है। इसके बावजूद युवाओं में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्थायी रोजगार के अपने अधिकारों की समझ क्षीण होती जा रही है। युवाओं को इस बात से अवगत कराने की जरूरत है कि लोकतंत्र में उनकी भागीदारी सिर्फ वोट देने तक ही सीमित नहीं है। उन्हें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि सरकारें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने में अपनी भूमिका निभाएं, ताकि नई सोच और वैज्ञानिक तर्क-प्रणाली को बढ़ावा दिया जा सके। रोजगार में बढ़ि से अमदनी के साथ लोगों की क्रय शक्ति भी बढ़ती है। बिना इसके मैन्युफैकरिंग और उपभोग के चक्र को गति मिलनी मुश्किल है। कृषि प्रक्रियाओं, मार्केटिंग, प्रोसेसिंग और उत्पादकता को बढ़ाते हुए बेहतर कौशल और रोजगार-निर्माण के लिए टेक्नोलॉजी के प्रसार, समस्याएं सुलझाने वाला नजरिया लेकर एमएसएमई पर फोकस करने को नीति-निर्माण का केंद्र बनाना ऐसी बातें हैं, जिनसे समझौता करना भविष्य को कमजोर करना है। लेकिन सामाजिक व्यवधानों, उपद्रवों, गड़बड़ियों से उपरोक्त चीजों से फोकस हट जाता है और युवा हिंसक होते चले जा रहे हैं। जाहिर है यह सब अंधविश्वास को बढ़ावा देने का ही नतीजा होता है। ऐसे में युवा आबादी का जो लाभ हासिल हो सकता था, वह बोझ बनता जा रहा है। राजनीति और नीति-निर्धारण युवा आबादी के जनसांख्यिकीय लाभ पर ही केंद्रित होना चाहिए। भारत को रोजगार-निर्माण और आपूर्ति श्रृंखला के लिए सक्षम बनाना होगा। यह रातोरात नहीं होता। दशकों

का समय नष्ट नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसमें एक पूरी पांडा का नुकसान होता है। वे अनुत्पादक बनते हैं तो समाज में असंतोष बढ़ता है। प्रत्येक नागरिक को स्वयं से ये प्रश्न पूछने चाहिए और सही लक्ष्यों के लिए क्या मांग करनी चाहिए? कक्षा 10 तक के स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों की भर्ती होना चाहिए। पिछली दो पीढ़ियों तक सरकारी/प्रायोजित स्कूलों में पढ़ाई हुई और वह इतनी अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा थी कि उसके बाद वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित कर पाए। लेकिन आज ऐसे स्कूल उपेक्षित हैं। सड़कों, इंस्टरेनेट और वित्तीय समावेशन के माध्यम से अच्छी कनेक्टिविटी मुहैया कराने के साथ-साथ अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना भी सरकार की प्राथमिक जिम्मेदारी है। मनरेगा मजदूरी देने वाला रोजगार है, लेकिन गुणवत्तापूर्ण और स्थायी रोजगार को गति देने के लिए अधिक से अधिक सक्रिय एमएसएमई की आवश्यकता है। युवाओं को अपनी कमर कसनी होगी और राजनीतिक शोर-शराबे के बीच सच्चाई की खोज करने की क्षमता विकसित करनी होगी। वैज्ञानिक सोच विकसित करके ही वे व्यक्तिगत जीवन में भी आगे बढ़ सकते हैं और देश के लिए भी योगदान दे सकते हैं। वे अपनी युवावस्था के बहुमूल्य समय को उहनें परोसी जाने वाली तमाम किस्म की सूचनाओं पर आँखें मूँदकर भरोसा करने में बरबाद नहीं कर सकते।

मंगल ग्रह पर पहुँचना आसान लेकिन कठिन है 'खुले में शौच' का निपटान



डॉ. सत्यवान सौरभ

ह। जबक शौचालयों का निर्माण आवश्यक बुनियादी ढाँचा है, उनके नियंत्रण उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों को संबोधित करने की आवश्यकता है जो स्वच्छता के प्रति लोगों के दृष्टिकोण और प्रथाओं को प्रभावित करते हैं। केवल शौचालय बना देने से उनके उपयोग की गारंटी नहीं हो जाती। खुले में शौच से जुड़ी गहरी जड़ें जमा चुकी आदतें, सुविधा और सामाजिक-सांस्कृतिक मानदंड बाधाओं के रूप में कार्य करते हैं। यहां तक कि शौचालयों, उचित हाथ धोने और मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन के लिए भी इष्टतम स्वास्थ्य लाभ के लिए व्यवहार परिवर्तन की आवश्यकता होती है। बचत हाता ह; ताज पाना और हवादार वातावरण तक पहुंच प्रदान करता है; शौचालय की टूट-फूट को कम करता है; महिलाओं को पुरुषों की नज़रों में शर्मिंदा होने से बचाता है; और जिद्दी पत्नियों और माताओं से बचने का एक आसान बहाना पेश करता है। सार्वजनिक एजेंसियाँ परिवारों को उनकी युवा लड़कियों की सुरक्षा के लिए शौचालयों में निवेश करने के लिए मनाने की कोशिश करती हैं। लेकिन गांवों में, महिला शिक्षकों और लड़कियों के साथ फोकस समूह-आधारित अध्ययन से पता चला कि खुले में शौच का एक केंद्रीय लाभ यह है कि यह महिलाओं के लिए समान लिंग वाले सामाजिक संपर्क के अवसर प्रदान करता है। कई क्षेत्रों में लड़कियों और महिलाओं को सभी पर बहस करने विचारों का

सतत स्वच्छता के लिए सामुदायिक स्वामित्व और कायक्रम के डिजाइन और कार्यान्वयन में सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होती है। भारत दुनिया का चौथा देश (रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ के बाद) और अंतरिक्ष में मंगल जांच शुरू करने वाला एकमात्र उभरता हुआ देश बन गया। लेकिन यह 50% से कम स्वच्छता कवरेज वाले 45 विकासशील देशों के समूह का हिस्सा बना हुआ है, जहां कई नागरिक या तो शौचालय तक पहुंच की कमी के कारण या व्यक्तिगत पसंद के कारण खुले में शौच करते हैं। भारत के लिए, किसी न किसी रूप में शौचालय तक पहुंच प्रदान करना आसान हिस्सा है। सबसे कठिन है लोगों को उनका उपयोग करवाना। ग्रामीण क्षेत्रों में, शौचालय-मुद्दा पर वहस करना, विवारा का आदान-प्रदान करने या बस एक साथ आराम करने के लिए सार्वजनिक स्थानों पर इकट्ठा होने की अनुमति नहीं है। किशोरों को और भी अधिक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है क्योंकि बुद्ध महिलाएं अक्सर युवाओं के बीच स्वतंत्र चर्चा की अनुमति देती हैं। इस संबंध में, खुले में शौच करना अन्य बाधाओं से मुक्त होकर बात करने और एक साथ समय बिताने का बहाना प्रदान करता है। इस प्रकार, ऐसे गांवों में खुले में शौच को खत्म करने के लिए सबसे पहले सामाजिक संपर्क के लिए वैकल्पिक सुरक्षित लिंग आधारित स्थानों की आवश्यकता है। स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार का एक अत्यंत आवश्यक और प्रमुख कार्यक्रम है। परंतु इसका संबंध केवल शौचालय निर्मित करने भर से नहीं है।

न्याय तो मिला पर अधूरा

ਰਾਮਦਾਨ

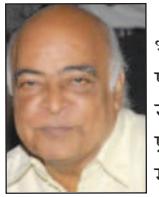
सोमवार, 12 फरवरी - 2024

दिग्भ्रमित होते युवा

एक अरब 41 करोड़ की आबादी के बोझ तले दबे भारत के लगभग साठ फीसद युवा अपने मंजिल की तलाश में हैं। लेकिन जहां कुछ युवा सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थानों में प्रवेश पाकर जीवन का मकसद पाने के लिए अच्छी पढ़ाई कर रहा है तो वहीं एक वर्ग ऐसा भी है जो वॉट्सएप पर मिलने वाली हर सूचना की फैक्ट-चेक किए बिना उस पर विश्वास कर अपना भविष्य अंधेरे में धकेल रहा है। अच्छी शिक्षा के अभाव में ऐसे युवाओं की संख्या घटती जा रही है, जो ठहरकर सोचते हैं और तर्क करते हैं। यह स्थिति तब है, जब संसार भर की बुद्धिमत्ता, तार्किकता, टेक्नोलॉजी को अपनाने की क्षमता आज युवाओं में है। जब दूर-दराज के इलाकों में भी ई-कॉर्मस की पहुंच हो चुकी है और मोबाइल से यूपीआई आधारित भुगतान-प्रणाली का व्यापक तौर पर अपना लिया गया है। इसके बावजूद युवाओं में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्थायी रोजगार के अपने अधिकारों की समझ क्षीण होती जा रही है। युवाओं को इस बात से अवगत करने की जरूरत है कि लोकतंत्र में उनकी भागीदारी सिफ्ट वोट देने तक ही सीमित नहीं है। उन्हें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि सरकारें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने में अपनी भूमिका निभाएं, ताकि नई सोच और वैज्ञानिक तर्क-प्रणाली को बढ़ावा दिया जा सके। रोजगार में वृद्धि से आमदनी के साथ लोगों की क्रय शक्ति भी बढ़ती है। बिना इसके मैन्यूफैक्चरिंग और उपभोग के चक्र को गति मिलनी मुश्किल है। कृषि प्रक्रियाओं, मार्केटिंग, प्रोसेसिंग और उत्पादकता को बढ़ाते हुए बेहतर कौशल और रोजगार-निर्माण के लिए टेक्नोलॉजी के प्रसार, समस्याएं सुलझाने वाला नजरिया लेकर एमएसएमई पर फोकस करने को नीति-निर्माण का केंद्र बनाना ऐसी बातें हैं, जिनसे समझौता करना भविष्य को कमज़ोर करना है। लेकिन सामाजिक व्यवधानों, उपद्रवों, गडबड़ियों से उपरोक्त चीजों से फोकस हट जाता है और युवा हिंसक होते चले जा रहे हैं। जाहिर है यह सब अंधविश्वास को बढ़ावा देने का ही नीतीजा होता है। ऐसे में युवा आबादी का जो लाभ हासिल हो सकता था, वह बोझ बनता जा रहा है। राजनीति और नीति-निर्धारण युवा आबादी के जनर्पणिकीय लाभ पर ही केंद्रित होना चाहिए। भारत को रोजगार-निर्माण और आपृति अंखेला के लिए सक्षम बनाना होगा। यह रातोरात नहीं होता। दशकों मानसिक संघर्ष तो बिलकिस बानो का ही था। बिलकिस बानो के इस मामले ने मुझे व बहुतों को इसलिये भी उम्मीद जगाई है कि एक अकेला व्यक्ति भी अगर खुद हिम्मत न हारे तो संघर्ष कर सकता है और सफलता भी हासिल कर सकता है। सुप्रीम कोर्ट का फैसला इस अर्थ में भी महत्वपूर्ण है कि सुप्रीम कोर्ट ने इन अपराधियों को बचाने में गुजरात सरकार को दोषी माना है। यद्यपि यह बलात्कार का मामला गुजरात में हुआ था, परन्तु न्यायिक निष्पक्षता के लिए सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर ही प्रकरण के निराकरण के लिए महाराष्ट्र न्यायपालिका में स्थानांतरित किया गया था। कानून यह कहत है कि जिस राज्य का न्यायालय निर्णय करता है उसी राज्य के लिए उस प्रकरण में सजा में कमी करने का अधिकार होता है। सुप्रीम कोर्ट ने माना है कि जब गुजरात सरकार की ओर से यह मामला सुनवाई के लिए सर्वोच्च न्यायालय में आया, तब इस तथ्य को न्यायालय के समक्ष छुपाया गया तथा जानते हुये भी यह तथ्य न्यायालय के सामने नहीं रखा, गया कि अब यह प्रकरण गुजरात में न्यायिक प्रकरण नहीं है, बल्कि महाराष्ट्र का है। इसी अर्ध सूचना के आधार पर सुप्रीम कोर्ट ने गुजरात सरकार को अपराधियों की याचिका पर विचार करने का आदेश दिया। यह एक सोचा-समझा सांप्रदायिक ताकतों का कल्पना करना कठिन है। सामूहिक दुष्कर्म के मामले में बिलकिस बानो को 6 साल संघर्ष करना था। जिनके उकसावे पर दंगे हुये थे और बलात्कार हुआ था। उनके ही घड़यंत्र पूर्ण तरीके का यह परिणाम था। उन्होंने अपने संरक्षित अपराधियों को बिलकिस बानो की यह योजना तैयार की। अपराधियों की ओर से सर्वोच्च न्यायालय में अपील भी की गई कि, गुजरात सरकार को पक्षकार बनाया जाये, ताकि गुजरात सरकार के पास मामला जाये और अपराधियों को रिहा करने का सुविचारित एक घड़यंत्र पूरा हो सके। सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय ने गुजरात सरकार को कठघरे में खड़ा कर दिया है। आम राय यह है कि जिस सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय को धोखा दिया है उसे भंग करना चाहिए साथ ही प्रधानमंत्री जी जो गुजरात से आते हैं भले ही आज मुख्यमंत्री न हो पर गुजरात सरकार के नियंत्रक माने-जाते हैं को भी इस घटना पर कुछ और नहीं तो कम से कम शाब्दिक खेद तो व्यक्त करना था। जो भी तत्कालीन विधि मंत्री या विधि सचिव रहे हो जिन्होंने गुजरात सरकार की ओर से सर्वोच्च न्यायालय में शपथ पत्र दिया हो उनके विरुद्ध तथ्य को छिपाने के आपराधिक घड़यंत्र का मुकदमा दर्ज किया है, उसके सदस्यों के बारे में भी कोई टिप्पणी न्यायालय ने नहीं की। बहुत संभव है कि उन्होंने इस टिप्पणी से बचने के कारण प्रकरण की वैधानिक सीमाओं को माना हो। चूंकि याचिका में उन टिप्पणियों को तर्क के रूप में नहीं रखा गया होगा, इसलिए इस पर चर्चा न की हो। परन्तु जो महानुभाव इस समिति के सदस्य ये उनकी जिन टिप्पणियों के आधार पर, सजा की अवधि को कम किया गया था वह भी बड़ी राजनीतिक पार्टियों के तथाकथित बड़े नेताओं का इस बारे में बयान तक पढ़ने को नहीं आया है। हालांकि सर्वोच्च न्यायालय से भी मेरी अपेक्षा थी कि सर्वोच्च न्यायालय भी अगर अपने इस फैसले के साथ-साथ यह आदेश देता है कि इन तथ्यों को छिपाने के अपराध में सिफारिश की, कि जेल में अपराधियों का प्रशासन व शासन के अपराधियों के विरुद्ध अपराधिक मुकदमा दर्ज किया जाये तो यह एक बेहतर निर्णय होता। मैं जानता हूं कि ऐसे आदेश की उम्मीद आज की न्यायपालिका का एक वह भी दौर था जब न्यायपालिका ने इंदिरा गांधी प्रतिमा प्रतिष्ठान के फर्जीवाड़ा के नाम पर मुख्यमंत्री स्व. श्री अब्दुल रहमान अंतुले को हाने का निर्णय दिया था। एक वह भी दौर था जब इलाहाबाद के न्यायाधीश जगमोहन लाल सिन्हा ने स्वर्गीय इंदिरा गांधी जैसी प्रधानमंत्री के खिलाफ फैसला देने का आदेश दिया था। जिसने भारतीय राजनीति में आमूल चूल परिवर्तन किया था। न्यायपालिका के वैदिन आम लोगों को स्वप्न (सप्ने) जैसे है। गुजरात सरकार के द्वारा बनाई गई जेल समिति के सदस्य जो कि जेल की सजा की अवधि को कम करने के प्रकरण पर निर्णय करती है, उसके सदस्यों के बारे में भी कोई टिप्पणी न्यायालय ने नहीं की। बहुत संभव है कि जेल समिति के आपराधिक घड़यंत्र का आदेश दिया जाए। आज देश में प्रतिपक्ष कहने वाले को है। अगर प्रतिपक्ष में जान होती या जनता की पीड़िओं की समझ होती तो इस निर्णय को सारे देश में गुजरात सरकार पर कार्यवाही की माँग को लेकर आंदोलन किया जाना चाहिए था। परन्तु जो महानुभाव इस समिति के सदस्य ये उनकी जिन टिप्पणियों के आधार पर, सजा की अवधि को कम किया गया था वह भी बड़ी राजनीतिक पार्टियों के तथाकथित बड़े नेताओं का इस बारे में बयान तक पढ़ने को नहीं आया है। हालांकि सर्वोच्च न्यायालय से भी मेरी अपेक्षा थी कि सर्वोच्च न्यायालय भी अगर अपने इस फैसले के साथ-साथ यह आदेश देता है कि इन तथ्यों को छिपाने के अपराध में सिफारिश की, कि जेल में अपराधियों का प्रशासन व शासन के अपराधियों के विरुद्ध अपराधिक मुकदमा दर्ज किया जाये तो यह एक बेहतर निर्णय होता। मैं जानता हूं कि ऐसे आदेश की उम्मीद आज की न्यायपालिका का एक वह भी दौर था जब न्यायपालिका ने इंदिरा गांधी प्रतिमा प्रतिष्ठान के फर्जीवाड़ा के नाम पर मुख्यमंत्री स्व. श्री अब्दुल रहमान अंतुले दूसरे जब सांप्रदायिकता का जुनून फैल जाता है, तब प्रशासनिक अधिकारी, कर्मचारी भी उससे मानसिक रूप से मुक्त नहीं हो पाते और वे ऐसे संगीन अपराधों को अपराध के संप्रदाय के बचाव के नजरिये से देखते हैं। इस समिति के सदस्यों ने जो सिफारिश की वह भी उनकी वैधानिक सीमाओं से परे थी। क्योंकि सजा की अवधि को कम करने का प्रावधान ऐसे गंभीर व धृणित अपराध के लिए नहीं है, बल्कि सामान्य अपराधों के लिए है। जिनमें अपराधी न केवल अपने जीवन को बदलते हैं बल्कि उनमें सुधार की गुंजाइश रहती है। यह भी विचारणीय है कि जेल सजा अवधि को कम करने के बारे में जो समिति बनी थी उस समिति में एक भी अत्यसंख्यक सदस्य नहीं था। क्या राष्ट्रीय नीति नहीं होना चाहिए जिसमें कम से कम एक या दो सदस्य अत्यसंख्यक तबके से नहीं होती है। अच्छा तो यह होता कि इस सम्पूर्ण अधिकारी व धृणित अपराध के लिए नहीं है। यह नियम बने कि राष्ट्रीय विश्वास और राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत करने के लिए ऐसी जन संबंधी कमेटियों में कुछ सदस्य अत्यसंख्यक समुदाय के रखे जाना अनिवार्य हो।

दक्षिण भारत में अबकी बार बढ़ रही है कमल खिलने की आशा

दक्षिण भारत में अबकी बार बढ़ रही है कमल खिलने की आशा



अशोक भाटिया

कहानी बूलडोजर की



53

सता स्वच्छता के लिए सामूदायिक स्वामित्व और कार्यक्रम के डिजाइन और कार्यान्वयन में सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होती है। भारत दुनिया का चौथा देश (रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ के बाद) और अंतरिक्ष में मंगल जांच शुरू करने वाला एकमात्र उभरता हुआ देश बन गया। लेकिन यह 50% से कम स्वच्छता कवरेज वाले 45 विकासशील देशों के समूह का हिस्सा बना हुआ है, जहां कई नागरिक या तो शैचालय तक पहुंच की कमी के कारण या व्यक्तिगत परिवर्तन के कारण खुले में शौच करते हैं। भारत के लिए, किसी न किसी रूप में शैचालय तक पहुंच प्रदान करना आसान हिस्सा है। सबसे कठिन है लोगों को उनका उपयोग करवाना। ग्रामीण क्षेत्रों में, शैचालय-जादाना प्रदान करना वाले लिए सार्वजनिक स्थानों पर इकट्ठा होने की अनुमति नहीं है। किशोरों को और भी अधिक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है क्योंकि बुद्ध महिलाएं अक्सर युवाओं के बीच स्वतंत्र चर्चा की अनुमति देती हैं। इस संबंध में, खुले में शौच करना अन्य बाधाओं से मुक्त होकर बात करने और एक साथ समय बिताने का बहाना प्रदान करता है। इस प्रकार, ऐसे गांवों में खुले में शौच को खत्म करने के लिए सबसे पहले सामाजिक संपर्क के लिए वैकल्पिक सुरक्षित लिंग आधारित स्थानों की आवश्यकता है। स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार का एक अत्यंत आवश्यक और प्रमुख कार्यक्रम है। परंतु इसका संबंध केवल शैचालय निर्मित करने भर से नहीं है।

बुलडोजर के फोटो ही दिखाई पड़ रहे हैं। उसी के बारे में सभी लोग बातें भी कर रहे हैं। टीवी में, पत्र-पत्रिकाओं में, फोन में हर जगह वही सब कुछ दिखाई पड़ रहा है। कई जगह बुलडोजरों की रैली निकाली जा रही है। युवा तो बुलडोजर के टैटू, गुदना गुदवा रहे हैं। हमारे देश आए ब्रिटेन के प्रधानमंत्री जॉनसन भी गुजरात में बुलडोजर बनाने वाली फैक्ट्री जाकर द देख आए। तो बात यहां तक जब पहुंच गई है तो बुलडोजर से कुछ न कुछ किया जाना चाहिए। उस बुलडोजर के पागलपन को कैश करना जरूरी है। बुलडोजरों से क्या काम और करोगे क्या तुम? बुलडोजर के नाम पर बुलडोजर के हाथों खलनायकों के काम में लाया जा रहा है। मुझे लगता है कोरोना की तरह बुलडोजर सारे देश में फैलने वाला नाम का आग्रह रूप से राजस्टड करवा लूंगा। बुलडोजर चिह्न को सबसे पहले पंजीकृत करा लूंगा। कारों के पीछे स्टीकर डिजाइनों के लिए भी पेटेंट बनवा लूंगा। रुक! रुक! इतना ज्यादा उत्तेजित होकर काहे खुद को थका रहा है? लेकिन यह सब क्यों तेरे लिए? पता नहीं कौन सा तरीका है? यह कौन सा नाया रिवाज है? जब अपराध होते हैं तो तहकीकात छोड़कर बुलडोजर ऊपर बैठे रहने की अगर बात है तो यह खाकी बर्दीधारी पुलिस किस लिए? किस काम के लिए? कुछ भी हो बुलडोजर के नाम पर अब तक कभी भी इतना हो हल्ला और भयानक विचार तुम्हारे दिमाग में लेकिन आए कैसे? उत्तर प्रदेश में बहुत सारे लोगों के सपनों में भी बुलडोजर ही दिखाई पड़ रहा है। बुलडोजर के नाम से चार, गैंगस्टर, गुड़े, नेता सारे डर के मारे कहीं कहीं छुप गए हैं। इसे देखकर मध्य प्रदेश और असम में भी बुलडोजरों को काम में लाया जा रहा है। मुझे कैसे? महाराष्ट्र में इसी बीच एक पेटोल पंप पर खड़े किए गए लोगों में भी बुलडोजर के नाम से बातें पर अनावश्यक चीरफाड करना बेवकूफी है।

चादा हांगा। जा अपराधा अपराध करके भाग जाए, उसे पकड़ने के बजाय, उनके घर के सामने बुलडोजर खड़ा करके डरना यह कौन सा तरीका है? यह कौन सा नाया रिवाज है? जब अपराध होते हैं तो तहकीकात छोड़कर बुलडोजर उपर बैठे रहने की अगर बात है तो यह सब क्यों तेरे लिए? पता नहीं कौन सा तरीका है? यह कौन सा नाया रिवाज है? जब अपराध होते हैं तो तहकीकात छोड़कर बुलडोजर का मतलब कुछ भी हो। बुलडोजर का मतलब किसी भी चीज को जड़ समेत उखाड़ कर, उठाकर दर फेंकने वाले यंत्र का नाम है। सिर्फ तोड़फोड़ करना, निर्माणों को गिराना और विध्वंस के लिए ही उसे उपयोगी मत मानो। वैसे विध्वंसक कार्यों के लिए ही उसका उपयोग करते हैं ऐसी सोच को तो मन से निकाल ही दो। देश में पहाड़ जैसी बढ़ चुकी समस्याओं का अंबार देखो। वैसे समस्याओं को जड़ से उखाड़ने की बात करना आशावादी दृष्टिकोण है। बुलडोजर से देश में किए जाने वाले कई काम अभी भी हैं। वह सब किए बिना बेकार से बातें पर अनावश्यक चीरफाड करना बेवकूफी है।

उन्होंने अपना शोध आलू पर विकासशील देशों में नए उच्च उपज देने वाले किस्म के बीजों के प्रयोग के कारण हुई। विवरण मिलता है कि इसकी प्रारंभिक सफलता मैक्सिको और भारतीय पुलिस सेवा में उनका चयन भी हुआ। उसी दौरान नीदरलैंड में आनुवंशिकी में यूनेस्को फेलोशिप के रूप में कृषि क्षेत्र में एक मौका मिला। स्वामीनाथन ने पुलिस सेवा को छोड़कर नीदरलैंड जाना सही समझा। 1954 में वह भारत आ और भारत खाद्यान्न के क्षेत्र में एक आत्मनिर्भर देश नहीं था। जानकारी देना चाहूंगा कि 1943 में, भारत विश्व में सबसे अधिक खाद्य संकट से पीड़ित देश था। बंगाल में अकाल के कारण पर्वी भारत में लगभग 4 मिलियन लोग भूखे के कारण मारे गए थे। वर्ष 1967-68 तथा वर्ष 1977-78 की अवधि में हुई हरित क्रांति भारत को खाद्यान्न की कमी वाले देश की त्रेणी से निकालकर विश्व के अग्रीं कृषि देशों की त्रेणी में

भारत में हरित क्रांति के अगुआ थे स्वामीनाथन !



सुनील कुमार महल

हरित क्रांति के जनक माने जाने वाले दिवंगत कृषि वैज्ञानिक एम.एस.स्वामीनाथन (पूरा नाम मनकोम्बु संबासिवन स्वामीनाथन) को भारत रत्न से सम्मानित किया जाएगा। जानकारी देना चाहूंगा कि पीएम मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर एमएस स्वामीनाथन के साथ एक तस्वीर शेयर करते हुए यह बात कही है। सच तो यह है कि स्वामीनाथन कृषि क्षेत्र में भारत का गौरव थे। सच तो यह है कि स्वामीनाथन को भारत में हरित क्रांति का अगुआर माना जाता है।

वास्तव में यह बेहद खुशी की बात होने के साथ ही हम सबके लिए अत्यंत ही गौरव की बात है कि भारत सरकार देश में कृषि और किसानों के कल्याण में उनके बहुत ही उल्लेखनीय योगदान के लिए डॉ एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न से सम्मानित कर रही है। यह बहुत ही रूचिकर है कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 1943 में बंगाल में भीषण अकाल पड़ा था, जिसने स्वामीनाथन को झकझोर कर रख दिया था और इसे देखते हुए ही उन्होंने वर्ष 1944 में मद्रास एग्रीकल्चरल कॉलेज से कृषि वैज्ञान में बैचलर ऑफ साइंस की डिग्री हासिल की। उल्लेखनीय है कि 1947 में वे

आनुवंशिकी और पादप प्रजनन की पढ़ाई करने के लिए दिल्ली में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई) आ गए। उन्होंने 1949 में साइटोजेनेटिक्स में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने अपना शोध अलू पर किया था। पाठकों को यहां यह जानकारी भी देना चाहूंगा कि स्वामीनाथन सिविल सेवा की परीक्षा में भी शामिल हुए और भारतीय पुलिस सेवा में उनका चयन भी हुआ। उसी दौरान नीदरलैंड में आनुवंशिकी में यूनेस्को फेलोशिप के रूप में कृषि क्षेत्र में एक मौका मिला। स्वामीनाथन ने पुलिस सेवा को छोड़कर नीदरलैंड जाना सही समझा। 1954 में वह भारत आ गए और यहां कृषि के लिए काम करना शुरू कर दिया। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि आनुवंशिक-विज्ञानी स्वामीनाथन ने वर्ष 1966 में मैक्सिको के बीजों को पंजाब की घरेलू किस्मों के साथ मिश्रित करके उच्च उत्पादकता वाले गेहूं के संकर बीज विकिसित किए। उन्हें विज्ञान की विज्ञानी सेवा में आत्मनिर्भरता का साक्षी बना। पाठक अवश्य जानते होंगे कि हरित क्रांति के परिणामस्वरूप खाद्यान्न विशेषकर गेहूं और चावल के उत्पादन में भारी बृद्धि हुई, जिसकी शुरुआत 20वीं शताब्दी के मध्य में विकासशील देशों में नए, उच्च उपज देने वाले किस्म के बीजों के प्रयोग के कारण हुई। विवरण मिलता है कि इसकी प्रारंभिक सफलता मैक्सिको और भारतीय उपमहाद्वीप में देखी गई। वर्ष 1967 से पहले भारत में खाद्यान्न का उत्पादन इतना नहीं होता था और भारत खाद्यान्न के क्षेत्र में एक आत्मनिर्भर देश नहीं था। जानकारी देना चाहूंगा कि 1943 में, भारत विश्व में सबसे अधिक खाद्य संकट से पीड़ित देश था। बंगाल में अकाल के कारण पूर्वी भारत में लगभग 4 मिलियन लाग भूख के कारण मारे गए थे। वर्ष 1967-68 तथा वर्ष 1977-78 की अवधि में हुई हरित क्रांति भारत को खाद्यान्न की कमी वाले देश की श्रेणी से निकालकर विश्व के अग्रणी कृषि देशों की श्रेणी में आ गई।

दक्षिण का बद्रीनाथ मंदिर, बंदगैलाराम



हैदराबाद: अब, तेलंगाना का अपना बद्रीनाथ है - जो चार धाम यात्रा के पवित्र पहाड़ी मंदिरों में से एक है राज्य का अपना बद्रीनाथ, जो बद्रीविशाल धाम के नाम से लोकप्रिय मूल मंदिर की प्रतिकृति है, हैदराबाद से 40 किमी दूर मेड्चल जिले के छोटे से गांव बंदगैलाराम में बना है। आसपास के गांवों के

500 से अधिक श्रद्धालु भगवान बद्री नारायण के दर्शन के लिए मंदिर में पहुंचे।

मूल बद्रीनाथ मंदिर की दक्षिण बद्रीनाथ प्रतिकृति, लोकप्रिय बद्रीविशाल धाम मंदिर, हैदराबाद से 40 किलोमीटर दूर प्लाट नंबर 33/34, साईं बाबा एन्कलेव, जीपीआर हाउसिंग वेंचर, बांदा मेलाराम, मुलग, मेडिकल जिला, तेलंगाना 502336, भारत में स्थित है।

भगवान बद्रीनारायण के इस मंदिर का निर्माण उत्तराखण्ड कल्पाणिकारी संस्था

द्वारा किया गया है, जो हैदराबाद में हनेवाले से बद्रीखण्ड के लोगों द्वारा गठित एक पंजीयन सोसायटी है।

दो मंजिला मंदिर 6,750 वर्ग फीट में फैला है और 50 फीट ऊंचा है, जो कि उत्तराखण्ड के बद्रीनाथ में मंदिर के समान है। ग्रांड फ्लोर पर एक हॉल है जिसमें 350 लोग बैठ सकते हैं।

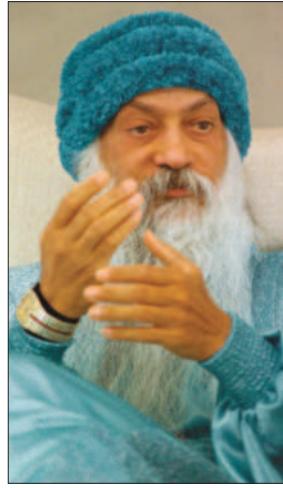
पहली मंजिल पर भगवान बद्रीनाथ की

मूर्ति है। इसमें भगवान गणेश, कुबेर, वल्मीकि, देवी लक्ष्मी, नर-नारायण, नारद और गरुड़ की मूर्तियाँ भी होंगी। परिसर में भगवान गणेश, देवी लक्ष्मी और नवग्रहों के लिए अलग-अलग मंदिर बनाए गए हैं।

मंदिर की ऊंचाई उत्तराखण्ड के मूल बद्रीनाथ मंदिर के समान 100% होगी जो कि तेलंगाना राज्य के हैदराबाद में

बद्री विशाल धाम की प्रतिकृति होगी। उत्तराखण्ड कल्पाणिकारी संस्था हैदराबाद के इतिहास के मूलतात्व के गवाह लोगों को उत्तराखण्ड और कुमाऊं की संस्कृति और परंपराओं से परिचित करा रही है तेलंगाना राज्य अब चार पीढ़ियों से रह रहे लगभग 25,000 उत्तराखण्डी परिवारों के लिए कर्मभूमि है।

मंदिर का समय
सोमवार से शुक्रवार - सुबह 8 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक और शाम 4 बजे से शाम 7.30 बजे तक
शनिवार और रविवार - सुबह 8 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक और दोपहर 3 बजे से शाम 7.30 बजे तक



धर्म के श्रेष्ठतम अनुभव में मैं बिलकुल मिट जाता हूं

दूसरी घटना घटती है: एक क्षण के लिए समय मिट जाता है, याइलेसेनेस पैदा हो जाती है। जैसा ने कहा है समाधि के संबंध में देवर शैल बी टाइम नो लांगर। समाधि का जो अनुभव है वहं नहीं रह जाता है। समय वाली नहीं रह जाता है। समय बिलकुल विलीन हो जाता है। न कोई अतीत है, न कोई भवित्व-शुद्ध वर्तमान रह जाता है।

सेक्स के अनुभव में यह दूसरी घटना होती है - न कोई अतीत रह जाता है।

एक-संभोग के अनुभव में अंहंकार विसर्जित हो जाता है, इंगोलेसेनेस पैदा हो जाती है।

एक क्षण के लिए अंहंकार नहीं रह जाता, एक क्षण को यह याद भी नहीं रह जाता कि मैं हूं। क्या आपको पता है, धर्म के श्रेष्ठतम अनुभव में मैं बिलकुल मिट जाता है, अंहंकार बिलकुल शून्य हो जाता है।

सेक्स के अनुभव में क्षण भर को अंहंकार मिटता है। लगता है कि होता है और पांगल होता है। वह अतीत स्त्री के शरीर के लिए क्षीण होती है, मौत उतनी करीब आती है।

क्योंकि जैसे ही अंहंकार मिटता है, आत्मा की झलक उपलब्ध होती है। जैसे ही समय मिटता है, परमात्मा की झलक उपलब्ध होती है।

एक क्षण को होती है यह घटना, लेकिन उस एक क्षण के लिए आदमी कितनी ही ऊँचा, कितनी ही शक्ति खोने की तैयार है।

शक्ति खोने के कारण पछताता है दो तत्व हैं, किंवदं वज्र से बाद में कि शक्ति क्षीण हुआ है, शक्ति का अपव्यय हुआ। और उसे पता है कि शक्ति जितनी

क्षीण होती है, मौत उतनी करीब आती है।

(क्रमशः)

किचन सिंक से जुड़े ये उपाय दिला सकते हैं वास्तु दोष से छुटकारा



रसोई से जुड़ा हुआ अधिक कार्य सिंक से जुड़ा होता है। सब्जी हो या फिर बर्तन हर चीज रसोई की सिंक में धोई जाती है। इस स्थान को सबसे ज्यादा अहम माना जाता है। इससे जुड़े उपाय तो हर किसी को पता है। यह दूसरी घटना घटती है - न कोई अतीत रह जाता है। एक क्षण के लिए अंहंकार नहीं रह जाता, एक क्षण को यह याद भी नहीं रह जाता कि मैं हूं। क्या आपको पता है, धर्म के श्रेष्ठतम अनुभव में मैं बिलकुल मिट जाता है, अंहंकार बिलकुल शून्य हो जाता है।

सेक्स के अनुभव में क्षण भर को इंगोलेसेनेस, टायमलेसेनेस का लगता है। इससे जुड़े उपाय तो हर किसी को वज्र से बातें करते हैं। तो वहाँ वास्तु के अलग हट के कुछ किया जाए तो वास्तु दोष जैसी परेशानियों को इंगोलेसेनेस के इसके बारे में नहीं पता होता है।

मान्यताओं के अनुसार इनसे जुड़े वास्तु दोष को सुख-समृद्धि में बदोतीर है। इसी के साथ ये भी बता दें कि जितना ये हैं मुख प्रदान करते हैं तो वहाँ वास्तु के अलग हट के कुछ किया जाए तो वास्तु दोष जैसी परेशानियों का भी सामना करना पड़ता है। तो चलाएं जानते हैं किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

वास्तु के अनुसार सिंक ऐसी जगह हो जहाँ सीधी धूप न आए। अगर ऐसा होता भी है तो आगे भारी पड़े या दरवाजों से ढक दें। ओवन ये भी गैस से सिंक को काफी दूर रखना चाहिए।

वास्तु स्त्रास से दूरिटि से सिंक के नीचे कभी भी डस्ट्रिब्यून नहीं रखना चाहिए। ऐसी जैसी तरफ हो ताकि जब भी आप बर्तन रोहने भी आपका मुंह उत्तर दिशा की तरफ हो ताकि जब भी आप बर्तन धोते हैं। नकारात्मक ऊर्जा में तरफ हो ताकि जब भी आपका मुंह उत्तर दिशा की तरफ हो तो आपका बर्तन धोते हैं।

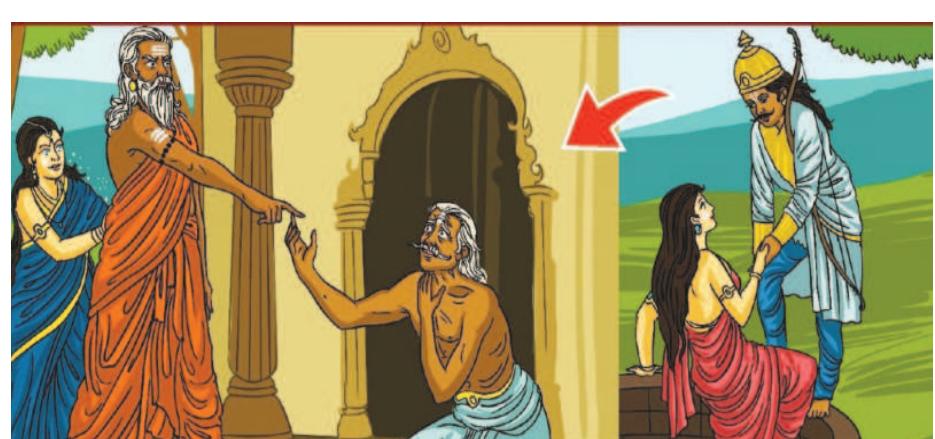
जिस घर में सिंक दक्षिण-परिचम दिशा में होता है तुस घर में हमेसा कल-कलेस देखने को मिलता है।

वास्तु के अनुसार सिंक ऐसी जगह हो जहाँ सीधी धूप न आए। अगर ऐसा होता भी है तो आगे धन हानि का सामना करना पड़ता है।

किचन सिंक का नल समय-समय पर ठीक करवाते रहना चाहिए। इससे पानी टायकना वास्तु दोष में बदोतीरी कर सकता है।

स्वास्थ्य को सही रखना चाहते हैं सिंक में कभी भी कुल्ला या फिर हाथ न धोएं।

मृत्यु किसी के द्वारा आ जाए तो खाली हाथ वापस नहीं जाती



राजा ययाती ने अपने जीवन के 100 वर्ष पूर्ण कर लिए थे। इन 100 वर्षों में 100 रानियों के साथ ऐसेवर्य का उपभोग किया था। उनके सौ-सौ राजाओं ने उन्हें राजा और वर्ष नहीं देता है। इस तरह 10 वर्ष राजा बार बोले, जो बद्रीनाथ में असंतुष्ट और अनुरूप रहा है। वह चाहता है कि कुछ और उपभोग कर ले, राजसत्ता भी आ जाए। अभी तुम तो बहुत जलदी आ गए। अभी तुम जाओ, थोड़े दिन बाद आ जाना। अभी तो जीवन के कई इंद्रधनुष देखने बाकी हैं।

मृत्यु की द्वारा आ जाए तो खाली हाथ वापस नहीं जाती।

सो मृत्यु ने कहा, 'राजन अग तुम्हरे स्थान पर तुम्हरे परिवार का कोई व्यक्ति मरने की तैयारी है। इन्द्रायन्वे से इन्कार कर देखा गया। उसने कहा, 'मैं मरने से अग एवं पिता को देखना चाहता हूं।'

मृत्यु ने कहा, 'बैठा, यह जानने के बाद कि

वर्ष की आयु पा लेता है। पुनः सौ वर्षों में 100 रानियों के साथ ऐसेवर्य का उपभोग किया था। उनके सौ-सौ राजाओं ने उन्हें राजा और वर्ष नहीं देता है। इस तरह 10 वर्ष राजा बार बोले, जो बद्रीनाथ में असंतुष्ट और अनुरूप रहा है। वह चाहता है कि कुछ और उपभोग कर ले, राजसत्ता भी आ जाए। अभी तुम तो बहुत जलदी आ गए। अभी तो जीवन के कई इंद्रधनुष देखने बाकी हैं।

मृत्यु ने कहा, 'राजन अग तुम्हरे स्थान पर तुम्हरे परिवार का कोई व्यक्ति मरने की तैयारी है। इन्द्रायन्वे से इन्कार कर देखा गया। उसने कहा, 'मैं मरने से अग एवं पिता को देखना चाहता हूं।'

उसने कहा, 'मैं मरने से अग एवं पिता को देखना चाहता हूं।'

मृत्यु ने कहा, 'बैठा, यह जानने के बाद कि

वर्ष की आयु पा लेता है। पुनः सौ वर्षों में 100 रानियों के साथ ऐसेवर्य का उपभोग किया था। उनके सौ-सौ राजाओं ने उन्हें राजा और वर्ष नहीं देता है। इस तरह 10 वर्ष राजा बार बोले, जो बद्रीनाथ में

पलक तिवारी का कहना है कि वह दिल से रोमांटिक है और उसे हमेशा से वैलेटाइन्स डे का इंतजार रहा है। उसने कहा, मैं निश्चित रूप से पूरे वैलेटाइन्स वीक को लेकर उत्साहित हरती हूँ। क्योंकि मैं दिल से रोमांटिक हूँ और इसका कोई इलाज नहीं है। वैलेटाइन्स वीक में हर और प्यार भरा माहौल होने का विचार सचमुच में कह वार थोड़ा परेशान करने वाला होता है, लेकिन इसका अनुभव करना बहुत सुखद है, खासकर यदि अपके पास इसे विताने के लिए सही लोग हों। और जब से 'पैलेटाइन्स डे' के बारे में मुझे पता चला है, मुझे वैलेटाइन्स डे बेहद



हमेशा
सहेलियों
के साथ
मनाती हूँ
'चॉकलेट-
डे'

प्रभास के साथ बनेगी रशिमका मंदाना की जोड़ी? 'स्पिरिट' में करेंगी अभिनय!



व्यस्त हैं।
वहीं बात करें
रशिमका
मंदाना की
आने वाली
फिल्मों के बारे
में तो वे अल्लू
अर्जुन की पैन
इंडिया

'पृष्ठा: द रूल' के लिए 'श्रीवल्ली' को भूमिका फिर से निभाएंगी। इसके साथ ही रशिमका 'रेनबो' और 'द गलफ्रेंड' नाम की तेलुगु फिल्मों की भी शूटिंग कर रही है। इसके अलावा वे विक्रम के काशल के साथ हिंदी फिल्म 'छाव' में नजर

अंदराज देखने को मिल सकता है। वहीं अभिनेत्री रशिमका मंदाना इन दिनों 'पृष्ठा 2' की शूटिंग में व्यस्त है। एक बार फिर वे साथ सुपरस्टार अल्लू अर्जुन के साथ धमाल मचाने के लिए तैयार हैं। वहीं इस बीच अभिनेत्री की अगली फिल्म से जुड़ी कुछ खबरें सामने आई हैं। खबर है कि रशिमका मंदाना की जोड़ी साथ सुपरस्टार प्रभास के साथ बन सकती है। रिपोर्ट के अनुसार, प्रभास की आने वाली फिल्म 'स्पिरिट' में मुख्य अभिनेत्री के तौर पर रशिमका मंदाना के नाम की चर्चा है। हालांकि, अभी तक इस बारे में अधिकारिक पुर्ति नहीं हुई है।

आर इन खबरों में सचाई हुई और रशिमका 'स्पिरिट' का हिस्सा बनीं तो यह प्रभास के साथ अभिनेत्री की पहली फिल्म होगी। यह पहली बार होगा जब प्रभास और रशिमका की जोड़ी को फैस पहुँच पर देखेंगे। यह निर्देशक संदीप रेड्डी वांग के साथ रशिमका मंदाना को दूसरी फिल्म भी होगी। उन्हें हाल ही में संदीप रेड्डी वांग की फिल्म 'एनिमल' में देखा गया था, जिसमें बॉलीवुड अभिनेता रणबीर कपूर भी मुख्य भूमिका में।

मैं शुरू होने की उम्मीद है। वहीं इन दिनों संदीप अपनी 'एनिमल' की मंदाना सफलता का जशन मना रहे हैं। वहीं 'स्पिरिट' को लेकर उत्साहित है और उन्हें उम्मीद है कि इस फिल्म में भी प्रभास का खास



मुझे इंतजार रहता है 'पैलेटाइन्स डे' का : पलक तिवारी

इंतजार होता है, वह आ चुका है। वैलेटाइन्स वीक के साथ शुरू रहे गया है प्यार का सैलिब्रेशन भी लेकिन व्याप्ति का लिए वैलेटाइन्स डे का जश्न भी मनाने की शुरूआत हुई।

'पैलेटाइन्स डे' का जश्न भी धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का उद्देश्य अपने जीवन में शामिल महिलाओं का लेकिन व्याप्ति का लिए वैलेटाइन्स डे के लिए वैलेटाइन्स डे में सबसे अच्छी सर्वेलिंग, मातापं, दादीपं, नानीया जो भी महिलाएं अपके जीवन में अहम स्थान रखती हैं। यह उनके साथ, उनके लिए मनाने वाला दिन है।

इस तरह हड्ड शुरूआत अमरीकन एट्रेस और कॉमेडियन एमी पोहलर को 'पैलेटाइन्स डे' का संरक्षक माना जाता है। कॉमेडी शो 'पार्स' एंड ब्रिएशन' में उनके काल्पनिक चरित्र 'लेस्ट्री बारबरा नो' के लिए एक दिन लड़ाकों में कहें तो 'पैलेटाइन्स डे' भी मनाया जाता है। आसान शब्दों में कहें तो 'पैलेटाइन्स डे' को लेकिन यह दिन लड़ाकों में है। वैलेटाइन्स डे को लेकिन यह दिन लड़ाकों में है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।

हर साल दुनियाभर के कई दिनों में वैलेटाइन्स-डे की तरह ही है लेकिन यह दिन लड़ाकों के लिए समर्पित है।



स्वतंत्र वार्ता, हैदराबाद

सोमवार, 12 फरवरी, 2024 9

'उज्ज्वल भविष्य' के लिए युवा युवती को

जीवन के कुछ पड़ावों पर फैसला बहुत सोच-समझ कर लेना पड़ता है और ऐसा ही एक पड़ाव है करियर चुनने का। अक्सर इस पड़ाव पर हुई एक गलती पूरी जिंदगी की भैंशनी दे जाती है। इसके लिए सही करियर विकल्प चुनना आपके लिए बहेतर होता है।

यहां कुछ शीर्ष करियर विकल्पों के बारे में आपको कुछ खास जानकारी दे रहे हैं।

इंजीनियर

इंजीनियरिंग एक बहुत बड़ा क्षेत्र है जो बहुत सारे नवाचार और कड़ी मेहनत के साथ एक सुनहरा भविष्य लेकर आता है। एक इंजीनियर कुछ नया बनाने के लिए बहुत सारी संभावनाओं के साथ इस क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त कर प्रतिष्ठित है। यदि आपने एक प्रतिष्ठित कॉलेज से अपनी इंजीनियरिंग की है, तो आपके

लिए

इंजीनियरिंग की डिग्री लेकर भी अच्छी कार्यनियों में नौकरी प्राप्त कर सकते हैं। वह आप में इसके प्रति लगन और रुचि होनी चाहिए।

अनुमानित वेतन: एक फ्रैशर युवा आता में लगभग 4 से 5 लाख रुपए प्रति वर्ष कमा सकता है।

चिकित्सक

डॉक्टर के पेशे की शुरूआत से ही मांग रही है। हर व्यक्ति अपने बचपन में लगभग डॉक्टर बनने का ख्वाब देखता है। वह एक ऐसा पेशा है जिसमें कभी कभी नहीं आती है। इसके अलावा, विभिन्न चिकित्सक क्षेत्रों में एक अच्छी विशेषज्ञता उत्प्रवाशित रिटर्न दे सकती है।

चाहे निजी प्रैक्टिस हो, सरकारी डॉक्टर, या पिछ सर्जरी डॉक्टर अपने करियर में बहुत पैसा कमा सकते हैं और उनकी लगातार मांग भी बढ़ रही है। आ ज के समय में देखती है।



अनुमानित वेतन: चिकित्सक के रूप में आप 4 से 6 लाख रुपए प्रति वर्ष तक कमा सकते हैं।

वकील

वकील का एक और सबसे अधिक पसंद किए जाने वाला पेशा है। करियर विकल्प के रूप में एक पेशेवर वकील की बहुत मांग होती है। वकील के कर्तव्य में विभिन्न चौंके शामिल होती हैं। जैसे कि: -सरकारी एजेंसियों के समक्ष, विभिन्न निजी कानूनी मामलों आदि में अदालतों में ग्राहकों का प्रतिनिधित्व करते हैं। -अपने कलाइंट को संवाद और सलाह देना।

कानूनी समस्याओं पर विभिन्न शोध आयोजित करना। -मौखिक रूप से और अपने कलाइंट या अन्य लोगों को लिखित रूप में

तथ्य पेश करना और अपने कलाइंट की ओर से वहस करना।

अनुमानित वेतन: लगभग 3 लाख रुपए प्रति वर्ष से शुरू।

चार्टेड अकाउंटेंट

यदि आप अंकों से प्यार करते हों, अंकों के साथ खेलना आपको अच्छा लगता है तो चार्टेड अकाउंटेंट निश्चित रूप से आपके लिए एक उत्कृष्ट विकल्प है। अमातौर पर चार्टेड अकाउंटेंट को सी.ए. के रूप में जाना जाता है, यह हमेशा विषयज्ञ छांगों के बीच करियर विकल्प तक हो सकता है।

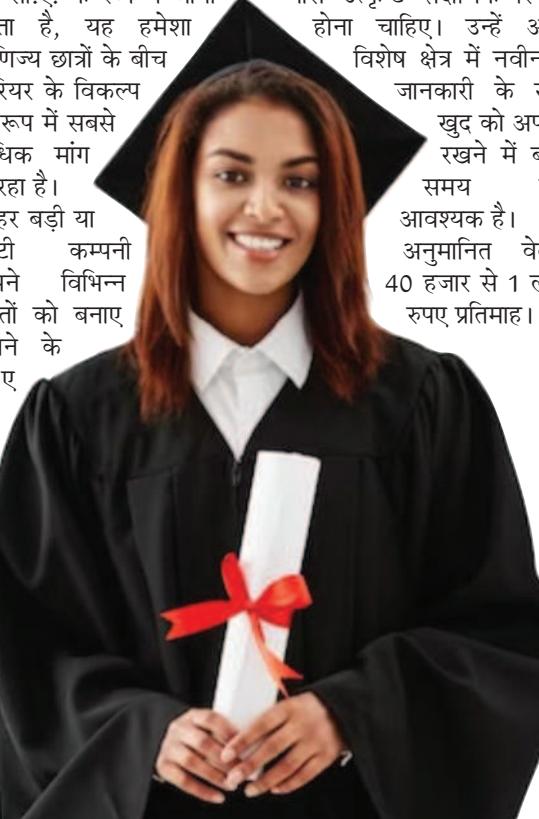
लैक्चरर

आज के समय में यह क्षेत्र उच्चतम भगतान वाले करियर में से एक है। इसके लिए आपके पास उत्कृष्ट शैक्षणिक रिकॉर्ड होना चाहिए। उन्हें अपने विशेष क्षेत्र में नवीनीकरण के रूप में सबसे अधिक मांग में रहा है।

जानकारी

खुद को अपडेट रखने में बहुत समय देना चाहिए। छोटी कम्पनी अपने विभिन्न खांगों को बनाए रखने के लिए।

अनुमानित वेतन: 40 हजार से 1 लाख रुपए प्रतिमाह।



जैसा 'सोचेंगे' वैसा बनेंगे

ज्यादातर लोगों का व्यवहार उलझन भरा होता है। क्या आपने कभी सोचा है कि कोई सेल्समैन एक ग्राहक को इज्जत क्यों देता है जबकि वह दूसरे ग्राहक को नजरअंदाज कर रहा है?

कोई आदमी एक महिला के लिए दरवाजा क्यों खोल देता है जबकि दूसरी महिला के लिए नहीं? कोई कर्मचारी एक सुपरियर को आदेशों का फटाफट पालन क्यों रहता है जबकि दूसरे सुपरियर के आदेशों का पालन मन मार कर करता है? यहां

किसी आदमी की बात ध्यान से सुनते हैं, जबकि दूसरे आदमी की बात अनसुनी कर रहते हैं।

अपने चारों तरफ देखें। आप देखें कि कोई लोगों को 'यार' कह कर बुलाया जाता है जबकि कह कर बुलाया जाता है। देखें कि कोई लोगों से महत्वपूर्ण 'यस सर' कहा जाता है।

इसके लिए लोगों से महत्वपूर्ण यार कह कर बुलाया जाता है। दूसरे लोग में वही देखते हैं जो हम अपने आप में देखते हैं। हमें उसी तरह का व्यवहार मिलता है जिसके काविल हम हमेशा खुद को समझते हैं। सोच के कारण ही सारा फर्क देखता है। वह आदमी जो खुद को हीन समझता है उसके योग्यता कितनी ही क्षमता न हो वह हीन ही बना रहेगा।

जिन लोगों को सबसे ज्यादा

सम्मान मिलता है वे सबसे ज्यादा सफल भी होते हैं।

इसका कारण क्या है? एक शब्द में इस का जवाब दिया जाता है इस का कारण है: सोच। सोच के कारण ही ऐसा होता है। दूसरे लोग हमें वही देखते हैं जो हम अपने आप में देखते हैं। हमें उसी तरह का व्यवहार मिलता है जिसके काविल हम हमेशा खुद को समझते हैं। सोच के कारण ही सारा फर्क देखता है। वह आदमी जो खुद को हीन समझता है उसके योग्यता कितनी ही क्षमता न हो वह हीन ही बना रहेगा।

जब तक आपने आप सबसे ज्यादा सोचेंगे, वैसा बनेंगे।

अवश्यक योग्यता: इन कोसी में दाखिला लेने के लिए यूं तो 12वीं के बाद ही गर्से खुल जाते हैं लेकिन डिग्री और डिप्लोमा के लिए किसी भी विषय में ग्रैजुएट होना जरूरी है।

अगर किसी चैनल में नौकरी पाना चाहते हैं तो ग्रैजुएट होना जरूरी ही जाता है।

व्यक्तिगत योग्यता: एक सफल वीडियो एडिटर बनने के लिए काविन्याशील होना चाहिए, ताकि योग्यता की जरूरत को मिलती ही काम कर सकती। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करता है जबकि दूसरे वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करता है।

इसके लिए योग्यता की जाता है। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करने के लिए योग्यता की जाता है। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करने के लिए योग्यता की जाता है। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करने के लिए योग्यता की जाता है।

उनके लिए वीडियो एडिटिंग का प्रैफेशन बेहद चमकदार है। एंटरटेनमेंट एंड मीडिया इंडस्ट्री में जीवन में देखते हैं जो रोजाना के अवसर भी।

न्यूज/एंटरटेनमेंट चैनल्स, म्यूजिक वर्ल्ड, फौंचर विडियो एंजेंसी, फिल्म पी.टी.वी. में रोजाना के भरपूर मौके हैं।

इसके लिए लोगों को अपने आप के लिए योग्यता की जाता है। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करने के लिए योग्यता की जाता है। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करने के लिए योग्यता की जाता है।

उनके लिए योग्यता की जाता है। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करने के लिए योग्यता की जाता है।

उनके लिए योग्यता की जाता है। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करने के लिए योग्यता की जाता है।

उनके लिए योग्यता की जाता है। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करने के लिए योग्यता की जाता है।

उनके लिए योग्यता की जाता है। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करने के लिए योग्यता की जाता है।

उनके लिए योग्यता की जाता है। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करने के लिए योग्यता की जाता है।

उनके लिए योग्यता की जाता है। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करने के लिए योग्यता की जाता है।

उनके लिए योग्यता की जाता है। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करने के लिए योग्यता की जाता है।

उनके लिए योग्यता की जाता है। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करने के लिए योग्यता की जाता है।

उनके लिए योग्यता की जाता है। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करने के लिए योग्यता की जाता है।

उनके लिए योग्यता की जाता है। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करने के लिए योग्यता की जाता है।

उनके लिए योग्यता की जाता है। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करने के लिए योग्यता की जाता है।

उनके लिए योग्यता की जाता है। वीडियो एडिटर को आदेशों का फटाफट पालन करने के लिए योग्यता की जाता है।

उनके लिए योग्यता की ज

पाक सेना प्रमुख ने इशारों-इशारों में की नवाज शरीफ के सरकार बनाने की वकालत



इस्लामाबाद, 11 फरवरी (एजेंसियां)। पाकिस्तान के आम चुनावों में वोटिंग के 50 घंटों के बाद भी अब तक फाइल नहीं आए हैं। निर्वाचनों ने बोटों की गिनती में धूंधली के आरोप लगाए हैं। इस बीच पड़ोसी मुल्क के सेना प्रमुख जनरल सैयद असीम मुनीर ने एक ऐसा बयान दिया जो चर्चा का विषय बन गया।

नवाज शरीफ का कर दिया सोर्ट
दरअसल, असीम मुनीर ने इशारों-इशारों में नवाज शरीफ का सरकार बनाने को लेकर सोर्ट किया है। मुनीर ने कहा कि विधिराजनीति और बहुवाहकर का गठबन्धन करते हुए देश में गठबन्धन सरकार बननी चाहिए जो अच्छी तरह से सरकार प्रतिनिधित्व करेगा।

पाकिस्तान चुनाव- वोटों की गिनती पूरी, इमरान समर्थक सबसे आगे

नेशनल असेंबली
कुल सीटें- 266, बहुमत- 134



93 75 54

है। नवाज की पार्टी 75 सीटों के साथ दूसरे नंबर पर है।

जेल में कैद इमरान की पीआईटी और बिलावल की पीपीपी ने कई सीटों पर धूंधली के आरोप लगाए थे। पाकिस्तान असेंबली में कुल 336 सीटें हैं। इनमें से 265 सीटों पर चुनाव हुए।

एक सीट पर चुनाव ताल दिए गए हैं, जबकि एक सीट एन-ए-88 के नतीजों को खालिकर कर दिया गया है। यहां 15 फरवरी को लिए वोटिंग होगी। बाकी 70 सीटें रिजर्व हैं। सरकार बनाने के लिए 134 सीटों पर बहुमत जरूरी है। पाकिस्तान में मुख्य रूप से 3 पार्टीयों के बीच मुकाबला है। इनमें पाकिस्तान मुरिलम लीग-नवाज (पीएमएल-एन), पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीआईटी) और पाकिस्तान पौपुल्स पार्टी (पीपीपी) शामिल हैं।

पाकिस्तान चुनाव में हिंदू उम्मीदवार सवीरा प्रकाश को मिली हार

शिक्षा के बाद भी दिखाया बेहतरीन जज्बा, वोट्स को दिया थे खास पैगम

इस्लामाबाद, 11 फरवरी (एजेंसियां)।

2024: पाकिस्तान के अशांत क्षेत्र खेल प्रकाशन की स्थिति बुनर से लड़ने वाली हिंदू महिला उम्मीदवार सवीरा प्रकाश का बयान आया है। आम चुनाव में शिक्षक स्थानों के बावजूद उन्होंने अपने निर्वाचन क्षेत्र के लोगों को धन्वन्तर दिया है। 25 वर्षीय प्रकाश ने अपना एक बांडियों शेरप करते हुए कहा, 'इस अविश्वसनीय वात्रा के लिए दिल से आशारी हूं। चेतावन बिलावल बुट्टों, समर्थकों और हमारे दृष्टिकोण पर विश्वास करने के लिए आप सभी का शुक्रिया।' इस चुनाव नहीं रहा जैसा हमने सोचा था। आपका अटूट समर्थन दुनिया के लिए मायने रखता है। हम एक साथ मजबूत और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे हैं।'

प्रकाश को चुनाव में मिले महज 1,700 वोट

सवीरा प्रकाश खेल प्रकाशन के बुनर निर्वाचन क्षेत्र से मैदान में थीं।



हालांकि, वह उन हिंदू पर कुछ खास उत्तर नहीं पाई। उन्हें मतदान में महज 1,700 वोट प्राप्त हुए, जिससे वह हार गई। सवीरा को बिलावल बुट्टों जरदारी की पाकिस्तान पौपुल्स पार्टी (पीपीपी) द्वारा पीके-25 सीट से विकार प्राप्त हुआ था। तो स्थान पर पीपीपी का आम आता है। पीपीपी को महिला विंग की महासचिव हैं।

पार्टी को उनसे काफी उम्मीद थी।

पार्टी को उनसे काफी उम्मीद थी।

अमेरिका में बड़ा हादसा दक्षिणी कैलिफोर्निया में हेलिकॉप्टर हुआ फ्रैश; छह लोग थे सवार

कैलिफोर्निया, 11 फरवरी (एजेंसियां)। अमेरिका के दक्षिणी कैलिफोर्निया में एक बड़ा हादसा सामने आया है। दक्षिणी कैलिफोर्निया के मोजावे रेगिस्टर्स में एक हेलिकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें छह लोग सवार थे। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि हेलिकॉप्टर में सवार लोगों का क्या हुआ। सैन बनर्डिंग काउंटी शेरिक के विभाग ने कहा कि उन्हें कोई जीवित नहीं मिला है, लेकिन उन्होंने यह भी नहीं बताया कि किसी की इस हादसे में मृत्यु हुई या नहीं। समाचार एजेंसी एपी के मुताबिक, पाकिस्तान की 265 नेशनल असेंबली सीटों में से 257 सीटों पर कारिणम सामने आया गया है। इसमें पीटीआई को सर्वाधिक 100 सीटों पर जीत मिली है। वहां पीएमएल-एन दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। नवाज शरीफ की अगुवाई वाली पार्टी को 73 सीटों पर कामयाबी हाथ लगा है। तो स्थान पर पीपीपी का टीम मैक पर जानकारी की ओर देखने के खाते में 54 सीटें आई हैं।

सवीरा प्रकाश बुनर में पीपीपी की महिला विंग की महासचिव है और उनके पिता डॉ। आम प्रकाश कीरब 3 दशकों से पीपीपी के सदस्य हैं। आपको जानकर, हैरानी होगी कि अकानिस्तान की सीमा से सटे अशांत खेल प्रकाशन के प्रत्येक समुद्रांश की महिलाओं के बावजूद इशारोंत में आम बेहद कठिन है। यहां अक्सर तालिबान और पाकिस्तानी सुरक्षा बलों के बीच झड़पों की खबर सामने आती रहती है। एआरवाई न्यूज के मुताबिक, पाकिस्तान की 265 नेशनल असेंबली सीटों में से 257 सीटों पर कारिणम सामने आया गया है। इसमें पीटीआई को सर्वाधिक 100 सीटों पर जीत मिली है। वहां पीएमएल-एन दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। नवाज शरीफ की अगुवाई वाली पार्टी को 73 सीटों पर कामयाबी हाथ लगा है। तो स्थान पर पीपीपी का टीम मैक पर जानकारी की ओर देखने के खाते में 54 सीटें आई हैं।

पाकिस्तान इलेक्शन कमीशन पर जानकारी की ओर देखने के खाते में 54 सीटें आई हैं।

पार्टी को उनसे काफी उम्मीद थी।

पार्टी को उनसे काफी उम्मी

क्षेत्रीय अस्पताल को जिला अस्पताल बनाया जाएगा : विधायक पटेल



भैसा, 11 फरवरी (स्वतंत्र वार्ता)। भैसा क्षेत्रीय अस्पताल को जिला अस्पताल में परिवर्तित करने के लिए विधायक पवार रामाराव पटेल ने हाल दी मंत्री से सुलझाई की। रविवार को क्षेत्रीय अस्पताल में आयोजित विकास समिति की बैठक में तीन आंशेन्स को फंड नहीं देनी तो वे अपने फंड दानदाताओं के सहयोग से अस्पताल को सुविधा की उपलब्ध होगी। नवनियुक्त सातां डॉक्टरों को मानवता के साथ जिम्मेदारी से काम करने की सलाह दी गयी। डॉक्टरों को साथ चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए शासन को यार से स्वतंत्रता करें और मानवता के साथ चिकित्सा सेवाएं प्रदान करें।

</div

अंडर-19 पेसर नमन तिवारी ने बुमराह से यॉर्कर डालना सीखा स्टेन और अख्तर भी पसंद; पिता बोले- 2011 वर्ल्ड कप के बाद पहला बैट दिलाया

नई दिल्ली, 11 फरवरी (एजेंसियां)। अंडर-19 वर्ल्ड कप के फाइनल में पहुंचने वाली टीम इंडिया के पेसर नमन तिवारी ने कहा कि जसप्रीत बुमराह की टिप्पणी का काम आ रहा है। नमन ने बताया, 'बुमराह से एनसीए में कई बार मुलाकात हुईं, उनसे मैंने यॉर्कर फेंकना और गेंद को कंट्रोल करना सीखा।'

18 साल के नमन आज ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ फाइनल में खेलते नजर आएंगे। वह बुमराह के साथ साथ अफ्रीका के डेल स्टेन और कपिस्तान के शेंगव अख्तर को भी अपनी इंस्प्रेशन मानते हैं।

पापा से 3 साल का समय लेकर

अंडर-19 में सिलेंडर हुए।

नमन के पिता सूर्यनाथ तिवारी एलआरईसी एंटर हैं। एक मिडिल ब्लास्ट पर्सन होने के नाते उन्होंने भी बाकियों की तरह अपने बेटे को पढ़ाई करने पर ही ज्यादा जोर दिया। सूर्यनाथ ने बताया, 'नमन ने 2011 के वर्ल्ड कप के बाद



टीम में जगह बनाई और कुछ साल बाद अंडर-19 टीम में भी उसका सिलेंशन हो गया।

टेस्ट क्रिकेट सबसे

चैलेंजिंग, यहां परा सपना'

नमन बोले, 'मैं दुनिया की सबसे तेज गेंद फेंकना चाहता हूं। मैं सामनियर टीम के साथ वर्ल्ड कप के लिए 3 साल का समय मारा। तब से मैंने उसे कभी नहीं रोका और हमेशा ही उसका सपोर्ट किया। एक ही साल में उसने अंडर-14

भविष्य में और भी बड़े चैलेंज आये और मैं उसे के लिए खुद को तैयार रखने की कोशिश करूंगा।

मुझे सभी फॉर्मेंट खेलना पसंद है, लेकिन एस्टर क्रिकेट सबसे चैलेंजिंग लगता है। एक बालर का असली टेस्ट इसी फॉर्मेंट में होता है। मैं आगे चलकर एक अच्छा टेस्ट क्रिकेटर बनाना चाहता हूं।'

बैटिंग पसंद लेकिन मौके कम मिले तो बालिंग शुरू कर दी

नमन ने बताया, 'मैंने बल्लेबाज के रूप में खेलना शुरू किया, मुझे बैटिंग ही पसंद है। लेकिन लखनऊ की एकेडमी में ज्यादा मौके नहीं मिले तो मैंने फिर बालिंग करना शुरू कर दिया। मैं लेपटी बैटिंग करता हूं, इसीलिए मैंने लेफ्ट आर्म से ही बालिंग भी कर दी।'

बुमराह से बहुत सीखा, स्टेन, स्टार्क और अख्तर भी पसंद

नमन ने कहा, 'बुमराह मेरी

इंस्प्रेशन हैं। मैं उनकी बालिंग

वीडियो को देखते रहता हूं, मैंने

बरकरार रख सकूँ।'

NCA में कई बार उनसे मुलाकात की और तेज गेंदबाज के माइंडसेट और स्ट्रिल्स के बारे में जाना बुमराह ने यॉर्कर को लेकर टिप्पणी दी, जो मेरे काम का आ रही है। उनका टिप्पण पर मैंने बहुत कैम किया, मुझे अपने एप्रेसन लाने के लिए आगे और काम करना है।

मैं हर तेज गेंदबाज से कुछ न कुछ सीखने की कोशिश करता हूं। बुमराह की वीडियो देखकर सीखता हूं। मुझे शोबूब अख्तर की स्पीड, डेल स्टेन की रिंग और मैचेल स्टार्क का एप्रेसन भी पसंद है।'

टीम एफ्टर से फाइनल तक पहुंचे

नमन ने पीटीआई की बताया, 'खिलाड़ियों की परफॉर्मेंस अब तक ताक शानदार रही है। साउथ अफ्रीका के खिलाड़ियों के लिए एक अपनी झोली में डाले।'

बुमराह से बहुत सीखा, स्टेन, स्टार्क और अख्तर भी पसंद

नमन ने कहा, 'बुमराह मेरी

इंस्प्रेशन हैं। मैं उनकी बालिंग

वीडियो को देखते रहता हूं, मैंने

बरकरार रख सकूँ।'

निखत और अमित 75वें स्ट्रैट्ज़ा मेमोरियल के फाइनल में पहुंचे 4 और भारतीय भी गोल्ड मेडल की रेस में; सबीना बोबोकुलोवा से जरीन का मुकाबला



चैपियन से मुकाबला

वहां पुरुषों के 5-0 किलो वेट में

अमित पांडेल ने क्लिन स्वीप

पहले सेमीफाइनल में अपना स्थान पकड़ा

किया। निखत ने पहले राउंड को

3-2 से जीता। उसके बाद दूसरे

राउंड में तीसरे राउंड में

क्लिन स्वीप करते हुए दोनों राउंड को 5-0 से

जीत लिया। निखत का फाइनल में

सबीना बोबोकुलोवा से मुकाबला

पड़ा।

निखत ने दूसरे और तीसरे

राउंड में किया क्लिन स्वीप

राउंड में तीसरे राउंड में

सेमीफाइनल के संश्योदन ताशकेन्वे

से पड़े।

अरुण्धति और बरुण ने तीनों

राउंड में क्लिन स्वीप किया

महिलाओं के 66 किलो वेट में

अरुण्धति चौधरी ने स्लोवाकिया की

फ्री स्टाइल चेस में गुकेश ने कार्लसन को हराया

वेसेन्हॉस शतरंज चैलेंज में संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर



गुकेश के बगवर हैं। कार्लसन, फिरोजा के अलारिजा के खिलाड़ियों में हारका पूरे अंक गंवाने से गुकेश की शुरुआत अच्छी नहीं हुई लेकिन इसके बाद वह परी तरह लय में आ गए और उन्होंने

तीनों अंक अपनी झोली में डाले।

नॉकआउट नियमों के अनुसार जो भी पहले स्थान पर रहेगा, वह अंतिम स्थान पर रहने वाले खिलाड़ियों से मिलेगा।

रैपिड प्रारूप आठ खिलाड़ियों

सचिन का फाइनल में मुकाबला उज्जेक्स्टान के शख्तोंदा मुजाफारोव से होगा। पुरुषों के 67 किलो वेट में जेतन के सेमीफाइनल में वॉकओवर मिलने के बाद फाइनल में प्रवेश कर लिया।

आकाश और नवीन को मिले बॉल्ड मेडल

आकाश और नवीन को ब्रॉन्ज मेडल

आकाश में डेल से जीत लिया। फाइनल में उनका अमित पांडेल ने बालिंग स्वीप करते हुए तुक्रों के गुम्बज़ों से होगा।

सचिन पहले राउंड में पिछड़ने के बाद दूसरे स्थान पर रहने वाले तीसरे राउंड जीते

वहां पुरुषों के 48 किलो वेट में ब्रॉकेन के अन्दरमेमोव एडडे से पहले बालिंग स्वीप किया। वहां 92 किलो वेट में प्रवेश किया। वहां 5-0 से होगा। बालिंग स्वीप के बाद राउंड में 3-2 से पिछड़ने के बाद तीनों राउंड में 5-0 से होगा। बालिंग स्वीप के बाद राउंड में 4-1 से जीत कर फाइनल में प्रवेश किया।

भारतीय खाने और रहन-सहन की बुराई कर फंसी यह सर्बियाई टेनिस खिलाड़ी, सोशल मीडिया पर हुई ट्रोल



यातायात और स्वच्छता की आलोचना की थी।

देश में करीब 60 सालाह विताने वाली रादनोविक ने अपने एक पोस्ट में हवाईअड्डे की तस्वीर साझा कर लिया- 'एप्टिडोस इंडिया'। अब उन्हें कभी भी नहीं देखेंगे।

म्यूनिश पहुंचने पर, रादनोविक ने एक और पोस्ट साझा किया जिसमें लिखा था, 'हैलो। केवल वे लोग जिन्होंने तीन सप्ताह दूर दूर रायोन के लिए आया हैं। जारीजिया के जारीजियां की समझा सकते हैं।'

लखनऊ ने वुड की जगह शमार जोसेफ को शामिल किया

3 करोड़ रुपए में आईपीएल फ्रेंचाइजी के साथ जुड़े, गाबा में ऑस्ट्रेलिया के 7 विकेट लिए थे



मुंबई, 11 फरवरी (एजेंसियां)। वेस्टइंडीज के तेज गेंदबाज शमार जोसेफ ने 7 और 10 रुपए में विकेट टाक्टक लिए और बैटरी 175 रुपए में विकेट पर लिए। फ्रेंचाइजी ने जित लिया।

जोसेफ ने इन्द्रनेशनल डेव्हू पर अपनी पहली गेंदबाजी को ब्रॉन्ज पाइसेट के बाद जीत लिया। लेकिन उन्होंने अपनी गेंदबाजी को ब्रॉन्ज पाइसेट के बाद जीत लिया।

रामकुमार को बैंगलुरु ओपन के ल

